विमीतान्यप्रभः विम्रवभज्ञ हलिल्य विमा कंपभागानितां प्रभागानिकां भ्रमम्भा मगिरपश्चितिविक्रमंग हर्मिक ष्ट्रभद्रकानका । अद्यद्रोद्वाभन्यमम् भ वब्रभग्रनस्यम् विभूनिक्रीवत्रभि नेग्छं भूम् इ एवस इंद्र सम्बू १ पाइभाष्ट्र उपमः भाषानिस हदसे छुड़िर ब्रह्म स नेपकराभुनभाष्ठानिस्थानुस्कृति य । मगीवभीमारिभ्रहीः भवनवां मन्त्रभ विष्ठान्त भूम्बद्धार्यान्भूणक्रवगायान्त्रान् नक्ताविक्ताना मान्या प्रवेमें भद्र हिमेग्युन् श्वार्ति हः भूभा र दिविदिण विताभः प्वित्रस्ता र परभूभणः वक्षान्त्र अतिनेस्यम्हर्गार् उन्हरित्य म करकारीअरुसिगां कुर्वाहित चन्वनाभः व कलार बनु समा विक्री

न्यक्तर्णनण्यस्यमः द्वींभगां विस्तुक्त नी दूरभने भेद्रिक्तू मेश्र १ ठ्यारिये सुस् विनामेणम्ड्रपे इन्निनाभगन् भर्भिर प्रमुद्रम्याची वलक्षाः श्रुष्ट्रभनश्चन्य। ३। श्वाभित्रभेत्रभगभे हो है जिस्ता भरकतर भेष्युभी व्यक्तिक्त प्रभयमञ्जू के के विक् ए । द्वार कि कार्या के कि कार्य के कि गंभक्र भिर्दि किए ज्वरित्रभ विमेषिक्ति विविष्ट्रभन्न ज्युभाष्ट्रीभ्युक्यक्षिभा ०० यमीद्रिकल्प्यामविलाभःभिष्णपूर्वम् भनः प्राप्त ह विशिष्य मुखी एन निसंदि उपक्रिक्रमण्याच् ०० क्विविकन्धरन मुभंदे पर उने विस्ति अस्तिः एए उद निक्षण्युयु युम्प्रमभद्भने विकास ०९ एतिभन्न मधन्यस्त्रम् इन्द्रेन्य जिलिनीम् ए गविता भार CC₂0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

अलाहमपुरामनिर्गात्यः महीतिः मेरनि पेनुभकदलाकः भगानम् अविविधभागी हर्गक्षः भद्दर् अर द्वरं वितिग्र अभाग ॐ त्र हरति छ उत्तरिय उत्तरिय प्रमाष्ट्रभा भ भूरामेगद्रभणं विविष्णभी सु महाचेन छ विक्लंनिस्ताएयम् : : प्रधर्वे चुरम् कल श्रीड मिनिविद्य कलाइथर भि रलकिविविवेश्यमक्रयदः न्यालभ क्रिकप्रमुलभाषानिक्री लाक इलिप्रिश्य अर्गेः भाषित्रा सहर बद्ध विचमिनिभ प्रवलंदनानि भण्डानिविधारभागित् ते भूरत रागिराधिक्षमासम्बद्धाः संघेरतप्र यक्षिप्रत्रभाषः ह मुबत्द्वर्ग्धंभ इत्या हम्मा वितिविक्षीत्रियानिक्षे भना भी कुर भन यक्ष भी भी तार जातीव उण्यक्तमभूग्राभी लेक वृश्वित्रभगति।कत

उसे प्रमा पम्हलं सम्बद्धा वण्डल परः किपमिश्चा ग्यत्रभण्तीद भृष्यपृभ निषित्तभार वश्वयाना वालिष्ट्रवान्भष प्रश्मित्रं भेष्ट्र माल्यमं वेथरभून भक्त महर द्रिट द्वार केरो किस दी भ विश्वर्णेषा श्रुट्ट श्रीकरा किरानि हमेद्रिः कल्लिका हुन्धः भीवानक र्शकारिमः अ सम्बद्धमार्गिक्लमा वस्पेयम्गित्रकृत्यस्त्रे दीप्रदास्मित्रिण्ड ज्यतिमा गर्भवश्चायक्रीका कृष्ट राष्ट्रिमिक्सिक्सिक्स वर्डीक्रिका भलंद्रवाद्रिक्षेत्र विष्युविष्ठिष कि स्वीतारिक दिए विश्वारिक कि भागामान मिला एक देश के तामित्र पश्चमञ् ,विद्वर्यभगगाम्। न्हें द्विष्युष्य विस्ययुक्त वृश्याह %

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

मध्यामुर्हल मुद्रवर्धिनिन मुद्र विल्भः भक्षभु रद्रभष्रा मनं हेर्गारेषः नाम उप्पाविष्यावनिक्रे विस्ति में क्षाप्त उल्लुएप पृद्ध प्रमुक्त तिलिभागितिला िन्ति हैं। क्षेत्रकादिविविवंवन्त्रन्ति चुरेष्ट्रहण्यित्यं भूत्राहिका ग्रह्मा मह श्राःभभूषाभागः : सम्प्रिक्यभग्रापत भएबीर भएकलेनिन्पलभउपर लक्ष भूममः ग्रमान्स्यिति वर्षाः प्रपारिका या विभेप्रतिमः द स्रेक्षण्यवलभन्भा मचे लेक पद अवि पंदिन कि ति वि ति स क्लाभाषार्भाष्ट्रभक्ष प्यमाणविक्ल दिया ने भेगा द भववा मुग्मिन दिने भरेषा वितिनित्र इत क्रिकेन्स् कर जिल्हा निव येयवग्दरीमण जगभनिमाध्तामग एगर भविजलेका भक्ति । य द्विपाविभागप्रवीद गुंदलेनिर्वित भवग्रदेशकार्य हत्त्रेश्वभारित्रप्राप्त्राम्

लकः भर्यक्रं ह्वाडिभ पर्योगक्लाः अविम नव्यमुग्डल न।। ल्डिन्यपद्यावकलभा नामभरभूदलभा लिमीय क्रियनभाउं गलमितक्येअस अरे भाष्यगार्वे मानुगर महिमत्ताः ॥ विवस्ति उर्वेद्वणः निवेद्युक्तिया वर्त्त्वादिक भीम भागतवगाउँ वी अराधन न द्वीपार्य बर्दे विह्वरूपभा जड्यानेकलं दिर्गपर क्रिंभि ९ रूसमंदेउष्टरेंगुंजनलर्जिये यः भतेपक्राभिक्तिय रशियोदिवभनीपि उ अस् विनिधं हरेष्ट्रभन्तमं हिन्भी गरुष् दंभन्भण्येन्यः भरणज्ञाम् र परम्काभ नीक्ष्रं निगनंभिडिमुक्तर हेमुश्विराब्येः शीक भारतभारताविः ५ पनामभुसम्बद्धाः एसनिभक्ताः नेन्द्रकला भीगढे : धर्मेर हुउनेवि व अभिन्न विमिर्गेनाः भी भीकृत गाएनभा भामभारायाम् इनहान्यान् न्त्रभा १ ज्यावरिक्षित्रक पित्रक वित्त

7

भिद्दम्बर्गिति विवद्यस्थिति । एया भर विव संग्रभिक्त दिया दिया विशेष्ट्र विशेष्ट् निवनवंग्रथनेयहि कु ग्या भक्तिक विवेष्ठायुण्यस्याप्त्री श्रापातिसा स्ट्रिमगाउँ वी ०० वालिस्प्रादि र्विष्य भवनाः रूपप्रभग्रभगरेगं भन्मा किंगामें ०० म्हीनेहम्सानीस्मवित्रेष्ठ विश्वनाः हरिश्वन भिम्भम्भ अद्वय अविसहण्यक्तभा आसम्ब विकीलपदः ।पलापीने अनु धनिविक्राम् अक्रोध्यनगाभ ःभण्य जन्तिप्राच्याः मर्ग वस्ति गर्धि गिर्मा १ भागना १ यंत्रेभं पनागभभभरत्भाग पद्मनामुहन्य

गं क्वियुरुषम्मः अस्त्रहरून्यि प्रविचयान्यभा ग्रेमिक्शिक्तिक पारिया कियसभाः र श्रीभाषं विस्योभाद्विगराभ्या भेपन चन्निन्नितिः शितिः भार्षिभगाः मर्गः मिक्नमीमिक्षिण्य विवर्ष विशेषक इस्मिन्स इपेड्युडेगुभवितुर्जनिकल इश्रीकं क्रेगिवर । जीने प्रस्थान ने लंडिया भारतियों वालिए प्रस्ताना त मुभग्राति वक्सः १ मासम्बन्धियोग व्यासभाप्तिः न पादिविद्याचीक्भास क्तिनाभी र नव्यवप्रशिष्ट्र वित्र नैधेरणभा ४५३विविण्हेगानुस्थः ज्ञाना का निर्मे खेली हैं के कि विश्वक्रयमा एया भारतिक्री गर्भ मार्थ भीमसे ० भ्रीवस्तेग्रिकिला हेड्यप्तस भ्रम्भा मुक्त्यानक व्यक्ति भाभना अभितः ०० प्रवर्गित्यमित्रम् कार्लिक

न्न

4.

L

गढि एक में भेड़ व श्रीक हुंचे रोयित महा एतिसमुक् व कल्मा G-यहिम्हचक्तेमा अदिवक्त गेण कलंदमण्या मग्भी गुरिश्चिक्री जर्मितिलयगः ० रपमेग्रान्डिति है रुगम्हरत्रच र पेनका भिनाक्षण नक्षत्वार्ध्य १ क्रामन्वन्याप्रीय नमण्यामे ग्रेंक्भेदेश्वनिश्चर्गाम् भि नक्ते । समारने व्यक्ष्मे इति इः गांभुरु क्यमा कडिकलेदेनिर्मा द्रियदिक्रि एं र अर्गक्रिमीक विनिपनंभितिभाक् इ इसिम्रवभः शैक्ष शक्त मुक्ति इसिन् इसि व उ अपद्मां खेंच वन्तं हिनकाभी भूमे इंस्पेर हिन्य क्षानगाउनित् संया क्राउता दिने भीक पादकलेका दमक्र कराने भाज राष्ट्रिमलंकाम १ एक्सिएक्सेंग ग्रह्मीय ण उपः विभित्रिण भूवनश्चः भूभान्तुणगानुष्

रभविद्वद्यंभाभहिगीयहवराय्य कलदेव इवनण नयंभन्नणग्यु १ रापण्यान ठ म भूमच्याभभागः उगव्हिन्नवर्ग यम्ब्रिसिश्चार्य ०० स्यानिए प्रश्नित्र विम रहा भे विह्यण वैम निक्य कुलियेन्द्रभूपार्व नाठगरने प्रिथियेन्तर णाभ ०० भाभव्यस्मित्रेड्स पन्तस रभण्डाम धार्या दि । स्था द्यग्रात ०९ ५ डिडिभड वदना । प्र वयप्रहल्या विक्रिकेन्द्र विक्रिके इ. यमा हे जनगंभग उर्गियी दिवाहित भासनी विन्यग ० मरीर निक्रणितिहै पर्तार्टराण्डवरा ए इस्लानरः भी छ उतिन्यज्ञरका ३ लासनाहर्

व.

4

विजय मडिंग्ड्यमण्यामा अभक्तिय यन्त्री धरीयज्ञ गरें उत्पात भिद्य विष् चेची हे अएन इचन गम्म मराभा भेड़ च्यदं दिश्वक्निमन्द्रन र एया भ्रदेशक ब्रिल्ट मर्ट्ड यानमञ्ज्या प्राप्टना क्रि: उसे भाव महभक्ष विश्व विवर्षे भूगने भद्र मर्गे इभद पीन उद्योधन्द्रम्थाः । भनस्रि स्तरिकाष्ट्रिया कि शृह्य व्यापना मन् क्राः मुक्रमिष्ट भष्मभुभगेयिछि । ना विमानं जनभू निमाण भरति प्रवायना वि क्टा द्रिया निर्मा अस्मित्रायि । उ। णार्वाच्या देश देश विभी प्रतान ज्यूराज्ञित्रितिहै नेविभन्नयूकारणमा १

一层人

लिएएए संभन्ने पनतारं अहा विभा वकलक निवर्दिय अपनियमभगिवया ०० महल्कं उषार्वे भूरेभी विश्व तन्या अ इब्स्ड्रिया व्यक्ति नार्क्या नियम ब्राप्ट भत्याना कानगर बक्तना मध्यम् यम भवनकलदिए जिल्हा भुजाविद्याः ०७ रिविश्वा स्वालिक क्रिक्टि नश्य वभग्ये अवय लंड प्रपालला नं द्वरान्त्रप्रोयित । उनम्पत्रवार य भूमित्व वन् इः भूक देश्वर भग है द्भविक्व जनमेयति अ धरीयत्यभापंतर्ह अहम् प्राणामा रणेश्रीपत्र लेशा भवायान्त्रापत्वा ३ एयाभूर् अद्भाष रपमंद्र उनगमे अभियादन विकर्प स इज्ञानम्बर्धः १ सङ्ग्रिस्त्रविः भर

400

भिः मिल्निक दबंब लाग एवा भारता मिल भेगभी भग हिंड प निभव दिभ हिंह्य वनवामननवयं प्रभूतनिक् षः प्रमायवध्यक्ति । वाभिष्टप्रव द्वाञ्च भन्म ब्रुवयन गमः श्रीभाषे गर्मा नैया भारति शामारा १ वनगमभन्ये वे क्लद्भिष्ठ्वतरः विविगाप्रभूव्या मुभव्यथण्ड र जन्नहरूरम् ण्यक्टंडवेयद्य भ्योग्रिथभुलाहिंगा द्रवर्गन्यस्यिद १ अहा उन्हरंगमः धनन एस हिंदाने एदि भदेश्य निष्ट है वद्यान्यादे ० कान्द्राविष्य दे हिन्दा रायड भड़कालवा की छे ए यमक प्रमिक्ता ०० भूलनिविषदेना निद्यानिकार्य स्थापित प्राचितिः े स्प्राहि कर्रिक्रिक्स

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

निम्बन्स्य निम्हणां अतिक ज ि उत्वर्णमा भारतिवर्द्ध एउट कि 9 प्रजीयल्यभाषेला भिर्म नभग रण्यायक सम्प्र भवाया अभाष गभं जिसक्दनिष्ठ पि चेडड अभगहरा भड़ डि.भर्डिप्रिक् के नरहर्वरणभ एवं भिद्रहर्गात यंग्रमभुर्भाति । भव दिश्वद्विंग जनमंत्रेन कथना न्य भागविद्याः धन्द्रित्र भरे। छिष्रभाष्ट्रमार्थ्य काम्प्रिडिंडवगार्थः भागनाहिं सम्हार भागमहा नर न्दलक्षनराग्रे एया भरादि नी द्वाभी

4.

ण्यामः भ्राभम् राज्यस्मियि ऽ मरीउछभगभाष्ट्र भड्ड कि विनयाग भः भर्षयादिकेभाष्ट्रं नवभद्यन दन १ रथमनेष्ठ्रीष्ट्र वनला ठ विश्ववं भवा स्थानिक कि के हिला जमभविद ० रानभार प्रभार उद्ययित्यां विज्ञयाः रुयागभेउद्य मुद्रं म'हगहगराग्री ए भार श्वरागिवह ये अस्मितिवह वस्त्राभ निम्हभभ्वभन्न स्टानहण्लर लभा ०३ ५ डिन्हरी अवमनेः अ निभन्ड ६ स्किपन्न मिरेशा ० उपानन

४इं अग्विषक्षं भन्ननवग्रमने नीनवज्ञेड वन् मंद्रभण्ड्ये मश्लयादिक कई डिडी येशिवन र ने 9 भवपः पिरिमें व राष्ट्रभा ने पना गाम अशकल्याभा अर्गेयनियं इर ला ने भिर्मन क्वेड हैं भ्राप्त जनक्यः मुभन्ने धर्मानं भीन भाग यिवक्रमने इ सम्परिश्वकृष्ट्र नहिंदियन नम् । उद्भी वर्ष क्रा भेगमग्रीवन्द्वने ५ हिंद्रभाव बीदविववयम् भीभूर्भाष्ट्रिक्त गभन्न अग्रहितः भिन्दिभुसाद

465

17

क्वयभाग्याम् भागाः गभाग्रिक् भाग्निक विश्व विश्व भ्या भः मङ्ग्रीहिंद्र भप्रभगिवन्त्र १ उग्मीन्भक्षातिः भर्ययामा द्रन्थ हुन्द्रन्यं मन्द्र्रा इमने इ एया भर्भ शहर है जनन मेरपण्डम स्मितिधापय दि ह न्वमर्थिन सन् १ इप्पर्यन्यान व्यक्ष पलम्क निष्य महिप याभाग गणनेशिवनग्रने ० म्हाण भेड बेसुद योधे उभापभड़ भा अर

श्वापाउँ महि असिमाहगाउँभनि २० थिएक्टिक्सी । दृद्दर मैर भ यम कलक्ष स्वन वि स्यनशिष नरमें ०३ ए दिन नुस्य नवर्ष नि दिन्भद्रश्योम् द्रश्येत्रप म्बभा भर्षय पिक्कृष्ट्र महिमान विलयति ० जन्य यभग उँ छ वि उपरादिभी विभिन्नी प्रकारिक रामाई दिशेय इ विद्याद श र ए भारेडबसुद स्वार्धेकक्रमभ स इनयं श्रुवा है र द्रभास इन द्रा विज्ञास्त्रीस्यास्य वियाग्यस्य ।

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

धात मा धारा क्या का मान दग्उयि र भर्मा है अभू प्रम भद्रश्विठवष्ट्यः नियुरंग ०उपिक भिंदक हाइपेक्स ५ रथपूर् भारित प्रामा करियुक्त वामा कलाइ भारतार्क विशिव्यविष्णुक र भ्र संभी नुउद्धा श्रीकृद्ध भवन दिक्षा किएविभिम्दिमेद्व भिद्दक्ष्मभ्य कि १ जनव्यभन रेंग्रे विकंद्व हिसद्भीकृष्ट्रेयभूवश्रव रङ्ग उनुमंगेयदि इ एड्रिज्य विषेशीङ् देहरूया हि भी हन भा छद्रका दिव

मक्षेत्र महिएइग्रिमित १ अभिप्रान हरोनिर्ट इस्पेन्यन्थ्यः एवस एनभीक्ष गगनेवाविष्ट उस ०० म रीम्राग्रेम् मृद् श्रीश्रापिष्ठियणागः भर्रो ह्यनं उत्तरं उद्गनः हमें इव कि ०० वन्ह्यम्भूष्य गराभान् विश्वत्यः एवापाइ हवनि इश्वर गुड्ड मेर्याद ०३ ए । इहर द ने अस P3 88844:5 अ । मान्ति । हा मा हाला है। दिन महाभक्षाक्षक छ में जुला कक्ष क्षिति है। इन्ति है। विकिश्य निन्द्र रिवर्गित विम्ति है है या प्रमान पर्वमृतिन्मा हिहा हिना हु। इसला चाल रह CO-0 Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri